

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 13, कथात्मक आलोचना

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

पुराने नए नियम में साहित्यिक आलोचना के बारे में सोचते समय, हमने साहित्यिक आलोचना के अंतिम सत्र में कुछ विशिष्ट विशेषताओं को देखा, और समझने की कोशिश करने के लिए प्राथमिक बिंदु यह है कि साहित्यिक आलोचना एक पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण है जो परंपरागत रूप से पाया गया है अर्थ पाठ में ही स्थित है, कभी-कभी पाठ में दुनिया पर ध्यान केंद्रित करने और केवल देखने के बदले में ऐतिहासिक प्रश्नों को लेखकत्व और स्रोतों और रूपों, ऐतिहासिक संदर्भ और यहां तक कि पाठ के बाहर की बाहरी दुनिया के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। पाठ और इसकी संरचना और अर्थ के निर्धारक के रूप में इसकी आंतरिक कार्यप्रणाली पर। और हमने पुराने और नए नियम में कई उदाहरण देखे कि साहित्यिक दृष्टिकोण किस प्रकार के प्रश्न पूछ सकता है, और उससे किस प्रकार के निष्कर्ष और परिणाम भी आ सकते हैं। एक और उदाहरण देने के लिए, हमने दृष्टान्तों को एक उदाहरण के रूप में देखकर समाप्त किया कि कैसे साहित्यिक आलोचना दृष्टान्तों को काल्पनिक साहित्य के रूप में विश्लेषण करने में काम कर सकती है, और दृष्टान्तों की संरचना, और उनके भीतर के पात्रों और मुख्य विशेषताओं के संदर्भ में इसका विश्लेषण कर सकती है।

लेकिन एक और उदाहरण देने के लिए, दिलचस्प बात यह है कि कथा से बाहर जाकर एक पत्र से एक उदाहरण देखें, गुस्ताव फ्रीटैग नाम के एक व्यक्ति ने सुझाव दिया है कि रोमन अध्याय 1 से 8, पॉल के पत्रों से एक उदाहरण का उपयोग करें, रोमन अध्याय 1 से 8 जिसका विश्लेषण हम आमतौर पर एक पत्र या पत्री के रूप में करते हैं। फ्रीटैग ने सुझाव दिया है कि हम रोमन अध्याय 1 से 8 को पाँच भाग वाले नाटक में तोड़ सकते हैं। वह एक नाटक के परिप्रेक्ष्य से रोमनों का विश्लेषण करता है, और वह सुझाव देता है, उदाहरण के लिए, अध्याय 1 छंद 16 और 17, जिसे हम आम तौर पर पत्र के विषय के प्रकार के रूप में मानते हैं, जहां पॉल विश्वास द्वारा औचित्य का परिचय देता है, वह सुझाव देता है कि यह क्रमबद्ध है उकसाने वाली कार्रवाई का, नाटक की प्रारंभिक कार्रवाई.

और फिर अध्याय 1, 18 से लेकर अध्याय 4, श्लोक 25 तक, वह बढ़ते तनाव को देखता है। और फिर अध्याय 5 कथा का चरम मोड़ है। और फिर अध्याय 6 और 7 गिरती हुई क्रिया है।

और अंत में, अध्याय 8 नाटक का संकल्प है। इसलिए फ्रीटैग रोमन अध्याय 1 से 8 को न केवल पहली शताब्दी के पत्र की सामान्य परंपराओं के अनुसार विश्लेषण करने में सक्षम देखता है, बल्कि वह इसे एक नाटक के अनुसार विश्लेषण करता है। उनके विश्लेषण की एक दिलचस्प विशेषता यह सुझाव है कि अध्याय 5 पत्र का निर्णायक मोड़ है।

कुछ आधुनिक रूपरेखाओं में अध्याय 6 से शुरू होने वाला एक नया खंड देखा गया है, जिसमें अध्याय 1 से 5 औचित्य से संबंधित है, और 6 से 8 पवित्रीकरण से संबंधित है। लेकिन इस विश्लेषण के अनुसार, अध्याय 5 मुख्य केंद्र बिंदु है, मुख्य बिंदु रोमन अध्याय 1 से 8 का एक नया खंड शुरू करता है। कुछ के विपरीत जो अध्याय 3, या शायद अध्याय 8 को पत्र के मुख्य खंड और बिंदु के रूप में देखते हैं। और इसलिए यह एक प्रयास का एक उदाहरण है जो कुछ मायनों में नए नियम के पत्र में नाटकीय साहित्यिक तत्वों को लागू करने के लिए बहुत दिलचस्प और सम्मोहक है।

इसलिए उदाहरण के रूप में पुराने नए नियम के पाठ के लिए कई दृष्टिकोणों, साहित्यिक दृष्टिकोणों को देखने के बाद, मैं निष्कर्ष में बाइबिल पाठ पर साहित्यिक विश्लेषण लागू करने में कुछ मुद्दों का उल्लेख करना चाहता हूं। सबसे पहले मुद्दा आधुनिक संरचनाओं को थोपने का है, या बस प्राचीन पाठ पर संरचनाओं और श्रेणियों को थोपने का है जो संबंधित हो भी सकती हैं और नहीं भी। निश्चित रूप से यह अपने आप में आपत्तिजनक नहीं है, लेकिन फिर भी हमारी समझ, पाठ का हमारा साहित्यिक विश्लेषण पाठ पर ही आधारित होना चाहिए, और पाठ पर कोई संरचना थोपने या श्रेणियाँ थोपने के बजाय जो वास्तव में फिट नहीं होती हैं और नहीं बैठती हैं काम।

तो सबसे पहले, उन लोगों से सावधान रहें जो प्राचीन पाठ पर आधुनिक संरचनाएं और श्रेणियां थोपते हैं। किसी भी संरचना या श्रेणी को पाठ में ही आधारित किया जाना चाहिए। जागरूक होने वाला दूसरा मुद्दा पाठ के ऐतिहासिक और धार्मिक आयामों की अनदेखी का खतरा है।

जैसा कि हमने देखा है, कभी-कभी साहित्यिक आलोचना ऐतिहासिक मुद्दों या लेखकत्व और ऐतिहासिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से संबंधित ऐतिहासिक प्रश्नों, जिसमें से एक पाठ का निर्माण किया गया था, पाठ के बाहर संदर्भात्मकता के मुद्दों, विशेष रूप से ईसाइयों के लिए, जो दावा करते हैं, को ब्रेकेट या यहां तक कि खारिज कर दिया जाता है। बाइबल इतिहास में ईश्वर की मुक्तिदायी गतिविधि और ऐतिहासिक संदर्भ में लोगों से निपटने और ऐतिहासिक कृत्यों में खुद को प्रकट करने को दर्ज करती है। ऐतिहासिक और धार्मिक प्रश्नों को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। इसलिए साहित्यिक आलोचना का इसमें बहुत महत्व है कि यह स्वयं पाठ से संबंधित है, इसमें यह हमें पाठ के पीछे काल्पनिक पुनर्निर्माण या अपने स्वयं के धार्मिक एजेंडे पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय पाठ पर बारीकी से ध्यान देने के लिए मजबूर करता है।

साहित्यिक आलोचना हमें पाठ का नए तरीकों से सामना करने की अनुमति देती है। यह हमें स्वयं पाठ के संपर्क में रहने की अनुमति देता है, लेकिन साथ ही हमें इस बात से अवगत होने की आवश्यकता है कि यह व्याख्यात्मक उद्यम का केवल एक पहलू है जिसमें ऐतिहासिक और धार्मिक प्रश्नों पर भी विचार किया जाना चाहिए और उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है। अब, शायद साहित्यिक आलोचना का एक उपसमुच्चय या पहलू अधिक विशेष रूप से कथात्मक आलोचना होगा।

कथात्मक आलोचना, फिर से, एक कथा पाठ का अध्ययन है, एक कहानी के प्रकार के प्रश्नों के दृष्टिकोण से जो कोई साहित्यिक प्रकार के अध्ययन में किसी भी कथा साहित्य से पूछेगा, जैसे कि यह प्रश्न पूछना कि कहानी का कथानक क्या है या पात्रों के बारे में प्रश्न पूछना, पात्रों को कैसे चित्रित किया जाता है, उनका विकास कैसे होता है, वे एक-दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं, कथा समय के विपरीत कहानी के समय जैसी चीज़ों के बारे में पूछना, या कथा के दृष्टिकोण के बारे में प्रश्न पूछना। इस प्रकार के प्रश्न बाइबिल पाठ पर भी लागू किए गए हैं। उदाहरण के लिए,

कथात्मक दृष्टिकोण से पाठ की एक सामान्य व्याख्या यह है कि लेखक, ऐतिहासिक लेखक और परिस्थितियों की पारंपरिक श्रेणियों के बजाय, और पाठक कौन हैं, इसके बारे में बात करना है, इसे वर्णनकर्ता के संदर्भ में तैयार करना है और टेक्स्ट।

पाठ में मौजूद आवाज़ आवश्यक रूप से ऐतिहासिक लेखक की बात नहीं कर रही है, बल्कि पाठ की आवाज़ का वर्णन कौन कर रहा है। और फिर आख्यान, जो पाठ सुन रहे हैं, यानी वह व्यक्ति जिसे उस व्यक्ति के साथ पहचान करनी है जिसे कहानी या कथा सुनाई जा रही है। दृष्टिकोण जैसी चीजें, दृष्टिकोण वह दृष्टिकोण होगा जो लेखक घटनाओं पर अपनाता है, लेखक का दृष्टिकोण क्या है जब वह कहानी कहता है, जब वह घटनाओं का वर्णन करता है।

और फिर सबसे दिलचस्प और महत्वपूर्ण बातों में से एक है कहानी का कथानक। अधिकांश कथा, कथा आलोचना के संदर्भ में, कथा को आम तौर पर एक कथानक के साथ चलते हुए देखा जाता है जो परिचय या सेटिंग से शुरू होता है जो किसी को मुख्य पात्रों से परिचित कराता है, यह एक का परिचय देता है, यह कहानी की उत्तेजक कार्रवाई है। परिचय या सेटिंग से परे अगला तत्व पाठ में संघर्ष या संकट होगा जो तीसरे स्थान पर बढ़ते तनाव का कारण बनता है, पाठ में तनाव बढ़ता है और कहानी फिर चरमोत्कर्ष पर पहुंचती है, जो तब एक समाधान का अनुभव करती है।

संकल्प तब उस बढ़ते तनाव का समाधान या समाधान लाता है जो इस चरमोत्कर्ष या इस संकट से उत्पन्न हुआ था। और फिर निष्कर्ष जो सभी ढीले धागों को एक साथ खींचता है और कहानी को उसके उचित अंत तक ले आता है। और इसलिए विशेष रूप से पुराने और नए नियम की कहानियों का अध्ययन पाठ की साहित्यिक कार्यप्रणाली के दृष्टिकोण से किया गया है।

और फिर, कथावाचक और आख्यानों और कहानी के कथानक और पात्रों के बारे में इनमें से कुछ प्रश्न पूछना, वे कैसे विकसित होते हैं और उन्हें कैसे प्रस्तुत किया जाता है, वे एक-दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं। और फिर, कभी-कभी ऐतिहासिक प्रश्नों और ऐतिहासिक चिंताओं को कोष्ठक में रखने की कीमत पर भी, हालांकि फिर भी, यह आवश्यक रूप से इस पद्धति का

निहितार्थ नहीं है, लेकिन अक्सर इसके साथ जुड़ा होता है। एक बार फिर, मैं आपको बाइबिल ग्रंथों के विश्लेषण में कथात्मक आलोचना के उपयोग के कुछ उदाहरण देता हूँ।

सबसे पहले, एक पुराने नियम का उदाहरण देने के लिए, मैं आपको उत्पत्ति अध्याय 22, प्रसिद्ध अकेदा, इसहाक का बलिदान, इब्राहीम द्वारा इसहाक के बलिदान का प्रयास, अध्याय 22, 1 से 19 में से एक देता हूँ। और जैसा कि कहानी कहती है, भगवान इब्राहीम के पास आते हैं और उससे इसहाक को ले जाने और उसे बलिदान के रूप में पेश करने के लिए कहते हैं। और इब्राहीम ऐसा करता है।

वह इसहाक को पहाड़ों में ले जाता है और इसहाक खुद आश्चर्यचकित होता है कि दुनिया में हम कहां खोजने जा रहे हैं, बलिदान कहां है? हमारे पास लकड़ी है, हम जाने के लिए तैयार हैं। बलि के लिए जानवर कहाँ है? और इब्राहीम ने इसहाक को बाँध कर वेदी पर रख दिया, और छुरी गिराने को तैयार हुआ। और एक देवदूत की आवाज़, और भगवान बलिदान के लिए एक मेढ़ा प्रदान करते हैं।

और कहानी यहीं समाप्त हो जाती है। इसका विश्लेषण विशेषकर कथानक की कथा तकनीक के अनुसार किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, व्याख्या या सेटिंग अध्याय एक में पाई जाती है, जहां वर्णनकर्ता स्पष्ट रूप से इब्राहीम का परीक्षण करने के लिए भगवान के इरादे को इंगित करता है।

तो इस पूरी कहानी की शुरुआत में ही यह संकेत देने का इरादा है कि कहानी के बाकी हिस्से में भगवान इब्राहीम का परीक्षण कर रहे हैं। संकट दो श्लोक में उत्पन्न होता है, जहां भगवान इब्राहीम को अपने बेटे इसहाक का बलिदान करने का आदेश देते हैं। अब, हममें से अधिकांश के लिए, यह एक संकट की तरह प्रतीत नहीं हो सकता है, सिवाय इस तथ्य के कि हम संकट की व्याख्या अधिक अस्तित्वगत या मनोवैज्ञानिक रूप से कर सकते हैं।

कठिनाई यह है कि इब्राहीम को अपने ही बेटे को फाँसी देने के लिए बुलाया जा रहा है। और अगर हमें अपने किसी बच्चे की जान लेने के लिए कहा जाए तो हमें कैसा महसूस होगा? इसलिए हम इस समस्या को मुख्य रूप से एक प्रकार की अस्तित्व संबंधी समस्या के रूप में देखते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसके कुछ आयाम ऐसे थे। लेकिन जब आप उत्पत्ति के व्यापक संदर्भ को देखते हैं, तो यहां प्राथमिक कठिनाई यह है कि यह ईश्वर के वादे के लिए खतरा है।

इसहाक सिर्फ इब्राहीम का बेटा नहीं है। इसहाक वादा किया हुआ बीज है, परमेश्वर के वादे की निरंतरता है। और अब इब्राहीम को इस कहानी के वादे को खत्म करने के लिए कहा जा रहा है।

संकट ईश्वर के वादे के लिए खतरा है। बढ़ता तनाव तब श्लोक तीन से दस में घटित होता है, जहां इब्राहीम आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया देता है। वह आगे बढ़कर वादाखिलाफी करने वाला है।

और फिर, इसहाक भी उस मेढ़े के बारे में पूछता है जिसका वध किया जाने वाला है। जिस जानवर का वध किया जाना है वह कहां है, जो कहानी को और भी तीव्र बनाता है। और तनाव इस हद तक बढ़ जाता है कि इब्राहीम के सिर के ऊपर चाकू उठ जाता है।

और फिर श्लोक 11 से 14 में संकल्प आता है, जहां ईश्वर इब्राहीम को मौत का झटका देने से रोकता है और फिर बलि देने के लिए एक जानवर प्रदान करता है। और फिर श्लोक 15 से 19 तक निष्कर्ष है। ईश्वर से किया गया वादा, अब्राहम को दिया गया ईश्वर का धन्य वादा आशीर्वाद की पुनः पुष्टि की गई है।

और फिर कहानी अपने अंजाम पर पहुंचती है। यह अधिक सूक्ष्म स्तर है, पुस्तक का केवल एक खंड, यहां तक कि संपूर्ण पुस्तकों का विश्लेषण विशिष्ट कथा संरचनाओं के अनुसार किया जा सकता है, जैसे कि यह प्रदर्शनी या सेटिंग, एक संकट, जिसके बाद बढ़ता तनाव जो चरमोत्कर्ष पर पहुंचता है, एक समाधान तनाव, और फिर अंततः कथा का समापन। कोई भी व्यक्ति पुराने नियम के पात्रों का विभिन्न तरीकों से विश्लेषण कर सकता है।

कुछ कथा आलोचकों ने पात्रों को वर्गीकृत करने में रुचि व्यक्त की है कि क्या वे गोल पात्र हैं जो पूरी तरह से विकसित होते हैं, यहां तक कि उनकी शारीरिक विशेषताओं और यहां तक कि उनकी मनोवैज्ञानिक विशेषताओं पर भी चर्चा करते हैं, या क्या वे सपाट पात्र हैं जिन्हें बिल्कुल भी अधिक विकास नहीं मिलता है, चाहे वे हास्य पात्र हों। कॉमिक से हमारा तात्पर्य यह नहीं है कि वे आपको हँसाते हैं, बल्कि कॉमेडी, जिसका अर्थ है कि कहानी का अंत सुखद है, या चरित्र के संदर्भ में कहानी का सकारात्मक अंत है, या चाहे चरित्र दुखद हो, कि वह जगह है जहां कहानी में गिरावट आती है, चरित्र का नकारात्मक या दुखद अंत होता है, या फिर, चाहे चरित्र मुख्य चरित्र हो या परिधीय। विद्वानों ने उन दृष्टिकोणों के अनुसार पात्रों का विश्लेषण करने में रुचि दिखाई है, और फिर पात्र एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं, क्या एक पात्र दूसरे के लिए एक विषमता है, उदाहरण के लिए, एलीशा की कहानी में, पुराने नियम में एलीशा की कथाएँ, सबसे अधिक, कुछ विद्वानों ने एलीशा को एक गोल चरित्र, एक गोल आकृति के रूप में चित्रित किया है, क्योंकि उसका वर्णन किया गया है, और क्योंकि वह स्थिर होने के बजाय विकसित होता है।

कहानी में, शाऊल को अक्सर एक दुखद व्यक्ति माना जाता है, शाऊल का करियर ऊपर की ओर बढ़ता दिख रहा था, लेकिन अंत में एक दुखद गिरावट आई। की कहानी में, डेविड और गोलियथ की तथाकथित कहानी, जब आप कथा को अधिक ध्यान से पढ़ते हैं, तो वास्तविक, वास्तविक संघर्ष डेविड और गोलियथ के बीच नहीं है, वास्तविक संघर्ष डेविड और शाऊल के बीच है। ऐसा प्रतीत होता है कि गोलियथ एक विषम परिस्थिति है जिसका सामना डेविड और शाऊल दोनों करते हैं।

शाऊल, स्पष्ट रूप से, इस्राएल के राजा और सेना के प्रभारी के रूप में, गोलियथ शाऊल की समस्या है, और शाऊल नहीं जानता कि क्या करना है। शाऊल को इस रूप में चित्रित किया गया है, जैसे वह डर के मारे प्रतिक्रिया दे रहा हो, और नहीं जानता कि क्या करना है, लेकिन जब डेविड गोलियथ का सामना करता है, तो भगवान की मदद से, डेविड इज़राइल के कट्टर दुश्मन को मार डालता है। तो गोलियथ मुख्य रूप से डेविड और शाऊल के बीच सच्चे संघर्ष को उजागर करने का एक माध्यम है, और इसलिए वास्तविक, वास्तविक कहानी डेविड और गोलियथ के बारे में नहीं है, यह डेविड और शाऊल के बारे में है, मुझे लगता है।

तो कोई पुराने नियम के कई पाठों को देख सकता है, और सामान्य कथा विशेषताओं के संदर्भ में इसका विश्लेषण करने की विशेषता, विशिष्ट पद्धति को लागू कर सकता है, जैसे कि कथानक, और चरित्र-चित्रण, और दृष्टिकोण, कथावाचक, और वर्णनकर्ता, आदि। नया नियम, फिर से, नए नियम के कुछ उदाहरण देने के लिए, हम पहले ही दृष्टान्तों को देख चुके हैं, इसलिए आवश्यक रूप से मैं और अधिक विस्तार में जाने का इरादा नहीं रखता। लेकिन फिर भी, विशेष रूप से संपूर्ण सुसमाचार, मैथ्यू मार्क, ल्यूक और जॉन के खंडों या संपूर्णता का विश्लेषण करने में बहुत उपयोगी कथात्मक कार्य किया गया है।

लेकिन फिर भी, जैसा कि हमने कहा है, दृष्टान्तों का विश्लेषण उनके कथानक के अनुसार किया जा सकता है, चाहे, आप जानते हों, उनमें एक मुख्य पात्र है, या दो, या तीन, और वे कैसे बातचीत करते हैं। दृष्टान्तों का विश्लेषण अक्सर यू-आकार के कथानक के अनुसार किया जाता है, चाहे वे हास्यपूर्ण हों, यानी कि कथानक ऊपर की ओर मुड़ता हो, या चाहे वे दुखद हों, कथानक नीचे की ओर जाता है। कई लोगों ने उस परिप्रेक्ष्य के अनुसार दृष्टान्तों का विश्लेषण किया है।

कथात्मक आलोचना को लागू करने, या कथा या कहानी के परिप्रेक्ष्य से सुसमाचार का विश्लेषण करने के पहले प्रयासों में से एक, एक दिलचस्प पुस्तक थी जिसे अद्यतन किया गया है, लेकिन इसे दो व्यक्तियों द्वारा निर्मित किया गया था, उनके अंतिम नाम रोड्स और मिक्सी थे। उन्होंने एक सुसमाचार, मार्क ऐज़ स्टोरी नामक पुस्तक का निर्माण किया। और इस पुस्तक के बारे में दिलचस्प बात यह है कि इसे पुराने नियम के एक विद्वान और एक अंग्रेजी साहित्य के प्रोफेसर और विद्वान ने मिलकर लिखा है।

और वे प्रदर्शित करते हैं कि मार्क एक सुसंगत कहानी है, एक सुसंगत कथानक के साथ, और चरित्र-चित्रण के साथ, और फिर, वे मार्क के सुसमाचार के लिए कथा और कहानी विश्लेषण के कुछ समान तरीकों को लागू करते हैं। मैथ्यू के सुसमाचार को बढ़ती शत्रुता की तर्ज पर विकसित होते देखा जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि एक बढ़ता तनाव या एक साजिश है जो धार्मिक नेताओं और स्वयं यीशु के बीच बढ़ती दुश्मनी पर जोर देती है।

अध्याय दो से शुरू करते हुए, जहां हेरोदेस यीशु को बाहर करने की कोशिश करता है, उस बिंदु से, साजिश बढ़ती है और तनाव विकसित होता है, फिर से, धार्मिक नेता तेजी से यीशु के प्रति अधिक शत्रुतापूर्ण हो जाते हैं। और मैथ्यू की कथा, अन्य बातों के अलावा, इस पर जोर देने के लिए संरचित प्रतीत होती है। जॉन का सुसमाचार, जॉन के सुसमाचार में, यीशु, स्पष्ट रूप से, प्राथमिक नायक या सुसमाचार के नायक के रूप में कार्य करता है।

और कहानी का बाकी हिस्सा इस बात से संबंधित है कि यीशु कई अन्य लोगों के साथ कैसे बातचीत करते हैं और कैसे संबंध रखते हैं। यीशु को स्वयं ईश्वर से बातचीत करने और संबंधित होने के रूप में चित्रित किया गया है। यीशु को शिष्यों के साथ बातचीत करने और उनके साथ संबंध रखने, और यहूदी नेताओं और स्वयं शैतान सहित अन्य छोटे पात्रों के साथ बातचीत करने और संबंधित होने के रूप में चित्रित किया गया है।

सुसमाचार विभिन्न पात्रों की प्रतिक्रियाओं के इर्द-गिर्द घूमता है, चाहे वे यीशु के लिए स्वीकार्य हों या अस्वीकार्य। और इसलिए यीशु के चरित्र को सुसमाचार में अन्य पात्रों के साथ उनकी बातचीत के संबंध में वर्णित किया गया है। और फिर यह अलग-अलग प्रतिक्रियाओं पर ध्यान आकर्षित करता है, विशेष रूप से जॉन के अध्याय सात और आठ और नौ जैसे खंड में, यीशु की अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ, जो पाठकों को इसके साथ जुड़ने के लिए कहती हैं, नेताओं को उचित प्रतिक्रियाओं के साथ संरेखित करने के लिए कहती हैं। उन प्रतिक्रियाओं के परिणाम.

तो कोई सुसमाचार के पात्रों की जांच कर सकता है। इस बिंदु पर, मैं धीमा हो जाऊंगा और इसके बारे में थोड़ा और बात करूंगा, यह प्रदर्शित करने के संदर्भ में कि कुछ पात्र जॉन के सुसमाचार में कैसे कार्य करते हैं। दरअसल, ये दोनों अपेक्षाकृत छोटे पात्र हैं।

और पहला चरित्र जिस पर मैं चर्चा करना चाहता हूं वह शायद सबसे छोटा चरित्र है, या कम से कम सुसमाचार में सबसे कम ध्यान दिया जाता है, और कोई महत्वपूर्ण भूमिका निभाता नहीं

दिखता है। और वह बरअब्बा का चरित्र है, जो वास्तव में तीनों सुसमाचारों में आता है। लेकिन यह दिलचस्प है, जॉन ने जो भूमिका निभाई है।

और साहित्य में पात्रों की जांच करने के तरीकों में से एक, विशेष रूप से सुसमाचार में, पात्रों की जांच करने के तरीकों में से एक, मुझे लगता है कि यह सहायक है, यह ध्यान देकर कि लेखक उन्हें व्याकरणिक रूप से क्या भूमिका देता है, व्यापक प्रवचन में उनके कार्य की जांच करना है। मूलपाठ। अर्थात्, इस तरह के प्रश्न पूछने के लिए, क्या एक चरित्र, सबसे पहले, क्या एक चरित्र पूरे काम के दौरान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है? या चरित्र केवल एक ही स्थान पर उभरता है? क्या सभी सुसमाचारों में चरित्र उभरकर सामने आता है, जैसे कि यीशु, या धार्मिक नेता, या शिष्य, सुसमाचार में स्पष्ट रूप से प्रमुख पात्र और प्रमुख खिलाड़ी हैं? या क्या कोई पात्र सुसमाचार में विशिष्ट स्थानों पर केवल दो बार ही उभरता है? दूसरा, जब चरित्र का उल्लेख किया जाता है, तो चरित्र का उल्लेख कैसे किया जाता है? क्या वर्ण विषय है, मुख्य अभिनेता है, क्रिया का विषय है? क्या चरित्र को वास्तव में क्रियाओं की क्रिया करते हुए प्रस्तुत किया गया है? या चरित्र केवल वस्तु है? क्या उस पर किसी और ने कार्रवाई की है? वह कभी भी अपना कार्य स्वयं नहीं करता। यदि वह क्रिया का विषय है, तो क्या वह केवल क्रिया का विषय है जो उसकी पहचान कराता है, जैसे कि बरअब्बा है, या बरअब्बा एक विद्रोही था, या बरअब्बा एक डाकू था? वह शब्द यह नहीं था कि वह कोई क्रिया करता है, यह तो बस उसकी पहचान करना है कि वह कौन है।

या फिर, क्या अभिनेता क्रिया की क्रिया, गतिविधियों का विषय है? क्या अभिनेता वास्तव में कथा में कुछ कर रहा है? या फिर, क्या अभिनेता को केवल क्रिया की एक वस्तु के रूप में, या किसी और चीज़ के संशोधक के रूप में संदर्भित किया जाता है? क्या अभिनेता, फिर से, कथा में वास्तविक भागीदार होने के विपरीत, अभिनेता को केवल किसी अन्य व्यक्ति के भाषण में संदर्भित किया जाता है? और फिर, किस प्रकार की क्रियाएं जुड़ी हुई हैं, या प्रतिभागी या चरित्र क्रियाओं के प्रकार से जुड़ा हुआ है? क्या वे काम कर रहे हैं, या क्या उन्हें केवल एक क्रिया से जोड़ा जा रहा है जो पहचानती है कि वे कौन हैं? यह सब जोड़ने पर, कोई यह समझना शुरू कर

सकता है कि व्यक्ति क्या भूमिका निभाता है। और बरअब्बा का उल्लेख किया गया है। आपको सुसमाचारों में, जॉन के सुसमाचार में, बरअब्बा का केवल दो बार ही उल्लेख मिलता है।

और दिलचस्प बात यह है कि उनके बारे में बहुत कम कहा गया है। और हम पद 40 में पाते हैं, पद 40 में, जब यीशु पर मुकदमा चल रहा था, तो भीड़ ने पीलातुस से पूछा, क्या तुम चाहते हो कि मैं यहूदियों के राजा को, जो यीशु है, रिहा कर दूँ? और श्लोक 40 भीड़ की प्रतिक्रिया है। उन्होंने चिल्लाकर कहा, नहीं, उसे नहीं, हमें बरअब्बा दे दो।

और फिर लेखक कहता है, अब बरअब्बा ने एक विद्रोह में भाग लिया था। अब यह बताना थोड़ा आसान है कि कार्य की बात कहां तक है। नंबर एक, आप देखेंगे कि बरअब्बा कथा में कहीं और नहीं आता है।

लेकिन इसके अलावा, ध्यान दें कि उसका उल्लेख कैसे किया गया है। सबसे पहले, वह देना क्रिया का उद्देश्य है। और दूसरा, जब बरअब्बा एक विषय है, तो वह अस्तित्व की क्रिया का विषय है।

उसने बस ग्रीक पाठ की पहचान कर ली है। दरअसल, वह कहते हैं, अब बरअब्बा एक विद्रोही या डाकू था। उसका अनुवाद करने के विभिन्न तरीके हैं।

लेकिन बात यह है कि बरअब्बा कुछ करता नजर नहीं आता। वह विकसित नहीं है। वह कथा में अभिनेता नहीं है।

उसका उल्लेख केवल यह पहचानने के लिए किया गया है कि वह कौन है। और उसका उल्लेख केवल क्रिया की वस्तु के रूप में किया गया है। तो निष्कर्ष में, बरअब्बा कथा में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति प्रतीत नहीं होता है।

इसके बजाय, वह संभवतः एक विषम परिस्थिति के रूप में खड़ा है। नंबर एक, यीशु की बेगुनाही पर और अधिक जोर देने के लिए, कि भीड़ एक विद्रोही या डाकू, एक विद्रोही को पसंद करेगी,

कि वे यीशु की तुलना में उसे मुक्त करना पसंद करेंगे, जिसकी बेगुनाही अध्याय 18 में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित की गई है। तो विडंबना यह है कि वे किसी विद्रोही या विद्रोही के बजाय किसी निर्दोष व्यक्ति की मौत को प्राथमिकता देंगे।

लेकिन दूसरा, बरअब्बा को विद्रोही या विद्रोही कहकर भी कठिनाई यह होती है कि भीड़, उसकी रिहाई की मांग करके, उसी श्रेणी में आती प्रतीत होती है। यानी अब वे भी इस नाजायज साजिश में शामिल हो गए हैं। वे अवैध गतिविधि में भी शामिल हो जाते हैं।

इसलिए सिर्फ बरअब्बा ही नहीं, बल्कि अनुयायी या भीड़ भी अब इसमें भाग लेते हैं। इसलिए जब आप अध्याय 18 को देखते हैं, तो पायलट और भीड़ और यीशु मुख्य पात्र प्रतीत होते हैं। फिर बरअब्बा एक छोटा सा पात्र है जो फिर से, केवल इस खंड में उभरता है, जहां तक कार्रवाई करने की बात है तो कोई भूमिका नहीं निभाता है।

वह वास्तव में भाषण का विषय है। वह एक भाषण में अंतर्निहित है। और फिर उस भाषण में भी, वह एक क्रिया का उद्देश्य है।

वह कुछ नहीं करता. और फिर जब जॉन कहता है, जब जॉन फिर से अपने नाम का उल्लेख करता है, बस अपने चरित्र की पहचान करने के लिए। इसलिए पात्रों को देखकर और उन्हें कैसे संदर्भित किया जाता है, विभिन्न प्रतिभागियों को, उन्हें एक पाठ में कैसे संदर्भित किया जाता है, यह इस बारे में बहुत कुछ कहता है कि लेखक उन्हें कैसे कार्य करते हुए देखता है।

जॉन के एक चरित्र का एक और उदाहरण जिस पर मैं काम कर रहा हूं वह शैतान या शैतान है और कैसे जॉन के सुसमाचार में उसका वर्णन किया गया है। पहली नज़र में, ऐसा प्रतीत हो सकता है कि जॉन के सुसमाचार में शैतान एक अभिन्न और महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। और कई बार कई महत्वपूर्ण स्थानों पर उनका उल्लेख किया गया है।

लेकिन एक बार फिर, हमें यह सवाल पूछने की ज़रूरत है कि शैतान या शैतान का चरित्र कैसा है? और एक अन्य शब्द है जिसका उपयोग उसी व्यक्ति को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। इस संसार के शासक का प्रयोग तीन बार किया गया है। दरअसल, उसे तीन बार शैतान, फिर एक बार शैतान, और फिर तीन बार दुनिया का शासक कहा गया है।

तो कुल मिलाकर सात बार, शैतान का उल्लेख किया गया है। तो वास्तव में, सुसमाचार में कम से कम शैतान का बार-बार खुलकर उल्लेख नहीं किया गया है, जो यह संकेत दे सकता है कि वह मुख्य पात्र या प्राथमिक पात्र नहीं है। लेकिन दूसरा, यह देखना महत्वपूर्ण है कि उसका उल्लेख कैसे किया जाता है।

नंबर एक, फिर से, जॉन अध्याय 6 और श्लोक 70 जैसे पाठ में ध्यान देना है। तब यह पहली बार है जब हम शैतान या शैतान नाम का उल्लेख देखते हैं। और यीशु ने उत्तर दिया, पतरस ने अभी यीशु से कहा, हे प्रभु, हम किसके पास जाएं? आपके पास जीवन के शब्द हैं।

और फिर यीशु कहते हैं, क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुना, तौभी तुम में से एक शैतान है। या इसका अनुवाद भी किया जा सकता है, आप में से एक शैतान है। और यीशु यहूदा की बात कर रहे हैं।

फिर, यहां ध्यान देने वाली दिलचस्प बात यह है कि जुडास की पहचान एक शैतान के रूप में की गई है। शैतान यहाँ कुछ भी करने या कोई कार्य करने में कोई भूमिका नहीं निभाता है। लेकिन शैतान शब्द का प्रयोग केवल यहूदा की पहचान के लिए किया जाता है।

और इसके अलावा, यीशु के भाषण में शैतान छिपा हुआ है। तो फिर, यहाँ शैतान यहूदा की पहचान करने के अलावा कथा में कोई भूमिका नहीं निभाता है। उनका उल्लेख अगला स्थान अध्याय आठ और श्लोक 44 में है, जहां यीशु फरीसियों के साथ संघर्ष में हैं।

और प्रश्न फिर से उठ जाता है, और यह यीशु के प्रति उचित और अनुचित विभिन्न प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में है। और यीशु अब फरीसियों के साथ अपनी बहस में अपनी चर्चा का सर्वोच्च बिंदु पद 44 में पाते हैं, इस सवाल पर कि फरीसियों का सच्चा पिता कौन है। यीशु एक सामान्य विचार या रूपक के साथ काम कर रहे हैं कि किसी की उत्पत्ति उसके चरित्र को निर्धारित करती है।

इसलिए फरीसी दावा कर रहे हैं कि हम इब्राहीम की संतान हैं। और ध्यान दें कि यीशु पद 44 में क्या कहते हैं, आप अपने पिता शैतान के हैं, और आप अपने पिता की इच्छा को पूरा करना चाहते हैं। वह शुरू से ही हत्यारा था, और सच्चाई पर कायम नहीं रहा, क्योंकि उसमें कोई सच्चाई नहीं है।

जब वह झूठ बोलता है, तो अपनी मूल भाषा बोलता है, क्योंकि वह झूठा है, और झूठ का पिता है। फिर से, मैं चाहता हूं कि आप ध्यान दें कि शैतान को यहां कई बार पिता के रूप में शैतान के रूप में संदर्भित किया गया है, लेकिन वह या वह जैसे सर्वनामों के साथ भी। लेकिन फिर से, मैं चाहता हूं कि आप ध्यान दें कि कथा में, शैतान कुछ भी नहीं करता है।

उसे केवल फरीसियों के पिता के रूप में जाना जाता है। और यहां तक कि जब यह उसका वर्णन करता है, तो एक बार फिर, यह उसे केवल एक हत्यारे के रूप में पहचानता है। जब वह कुछ करते हैं तो झूठ बोलते हैं।'

लेकिन फिर, यह सब यीशु के भाषण में अंतर्निहित है। इसलिए शैतान कुछ नहीं कर रहा है, यीशु बस उसका जिक्र कर रहा है और धार्मिक नेताओं, फरीसियों के साथ उसके संघर्ष के असली स्रोत को प्रदर्शित करने के लिए उसके बारे में बात कर रहा है। तो यहाँ, शैतान मुख्य रूप से फरीसियों, या धार्मिक नेताओं की गतिविधि को उकसाने या उकसाने की भूमिका निभाता है, यदि आप संदर्भ को अधिक स्पष्ट रूप से पढ़ते हैं, तो फरीसियों के साथ समस्या यह है कि वे सत्य बोलने वाले यीशु की बात सुनने से इनकार करते हैं, और वे उसे मारना चाहते हैं।

उन दो गतिविधियों के कारण, सत्य पर विश्वास करने में असफल होना और यीशु को मारने की इच्छा, यीशु कह सकते हैं, तुम अपने पिता शैतान से हो, जो झूठा है, और जो हत्यारा है। वह हत्यारा है और झूठ बोलता है। तो यहाँ शैतान केवल कथा में मुख्य पात्र के रूप में कार्य नहीं करता है, बल्कि मुख्य प्रतिभागियों, मुख्य अभिनेताओं, जो धार्मिक नेता या फरीसी हैं, के पीछे के सच्चे स्रोत को प्रदर्शित करने के लिए कार्य करता है।

कुछ अन्य स्थानों में शैतान का उल्लेख किया गया है, या शैतान का उल्लेख किया गया है।

अध्याय 13, श्लोक 2 में, शाम का भोजन परोसा जा रहा था, और शैतान ने पहले ही शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती को यीशु का चित्रण करने के लिए प्रेरित किया था, और यीशु जानता था कि पिता ने सभी चीजों को उसकी शक्ति के अधीन कर दिया है। यहाँ, शैतान का उल्लेख फिर से कथा में प्राथमिक अभिनेता के रूप में नहीं किया गया है।

और फिर से ध्यान दें, उसे यहूदा के संबंध में प्रस्तुत किया गया है। वह पहले से ही यहूदा को प्रभावित कर चुका है। लेकिन फिर भी, इस कहानी में मुख्य पात्र यीशु है।

व्याकरणिक रूप से, यह कहने के बारे में कि शैतान पहले से ही यहूदा को प्रेरित कर रहा है, यह कथन केवल पद 4 में यीशु द्वारा किए गए कार्यों की पृष्ठभूमि है, जहां वह एक तौलिया लेने जा रहा है और शिष्यों के पैर धो रहा है। तो एक बार फिर, शैतान एक छोटी भूमिका निभाता है, कथा में एक महत्वहीन भूमिका। फिर, ऐसा नहीं है कि वह महत्वहीन है, या नहीं कि शैतान स्वयं धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन हम पूछ रहे हैं कि वह कथा में क्या भूमिका निभाता है? शैतान कैसे कार्य करता है? उसका उल्लेख कैसे किया जाता है? लेखक उसे कहानी और कथा में अभिनय के रूप में कैसे प्रस्तुत करता है? शैतान का जिस अंतिम स्थान का उल्लेख किया गया है वह श्लोक 27 में है, उसी कहानी के अंत में, यीशु द्वारा शिष्यों के पैर धोने के बाद, और उसके विश्वासघात की भविष्यवाणी करने के बाद।

पद 26 कहता है, तब यीशु ने उत्तर दिया, वे पूछ रहे हैं, कौन तुम्हें पकड़वाएगा? और यीशु कहते हैं, यह वही है जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा थाली में डुबाकर दूंगा। तब उस ने रोटी का टुकड़ा

डुबाकर शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती को दिया। जैसे ही यहूदा ने रोटी ली, शैतान उसमें प्रवेश कर गया।

यह पहला स्थान है जहां शैतान क्रिया का, कार्य का, करने का विषय है। और पहली और एकमात्र जगह जहां वह वास्तव में जॉन के पूरे सुसमाचार में कुछ भी करता है। इस बिंदु तक हर जगह, अध्याय 13 के आरंभ में या भाषण में शैतान का केवल उल्लेख किया गया है, वह यहूदा के संबंध में यीशु द्वारा अपने शिष्यों के पैर धोने की क्रिया करने की पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करता है।

अब, पहली बार, शैतान वास्तव में कुछ करता है। अब, संपूर्ण सुसमाचार में शैतान को तीन बार एक अन्य पदनाम या वाक्यांश के साथ संदर्भित किया गया है, और वह इस दुनिया का शासक है। शैतान को तीन बार शासक कहा गया है, या कुछ अनुवादों में इस दुनिया का राजकुमार कहा गया है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, अध्याय 12, पद 31, यीशु ने कहा, यह आवाज तुम्हारे लाभ के लिए थी, मेरी नहीं। अब इस दुनिया पर फैसले का समय आ गया है। अब इस संसार के राजकुमार को निकाल दिया जायेगा।

इस संसार का राजकुमार, या इस संसार का शासक, शैतान का संदर्भ दे रहा है। उसे अध्याय 14 में दो बार और फिर अध्याय 16 और श्लोक 11 में और न्याय के संबंध में संदर्भित किया गया है, क्योंकि इस दुनिया के शासक, या इस दुनिया के राजकुमार, शैतान की अब निंदा की गई है। अब, फिर से जो दिलचस्प है, वह यह है कि इन सभी उदाहरणों में जहां शैतान को इस दुनिया का शासक कहा जाता है, या उसे इस दुनिया का शासक करार दिया गया है, सबसे पहले, फिर से ध्यान दें कि इन सभी संदर्भों में शैतान को शासक के रूप में दर्शाया गया है इस संसार की घटनाएँ यीशु के भाषण में घटित होती हैं।

वे यीशु के भाषण में अंतर्निहित हैं। तो फिर, कथा में, दुनिया का शासक कुछ नहीं करता है। यीशु के भाषण में उसका केवल उल्लेख किया गया है।

और इसके अलावा, दुनिया के शासक के सभी संदर्भों में, शैतान को न्याय किये जाने के रूप में चित्रित किया गया है। वह एक है, उसे शक्तिहीन बना दिया गया है, और इन सभी संदर्भों में, अब उसकी निंदा की जाती है, या अब उसका न्याय किया जाता है। वह एक पराजित शत्रु है।

जो दिलचस्प है वह दो अन्य बातें हैं। नंबर एक, शैतान को कैसे चित्रित किया जाता है इसकी विडंबना पर ध्यान दें। वही चीज़ जो शैतान यहूदा और धार्मिक नेताओं जैसे अन्य लोगों को यीशु को धोखा देने और मारने के लिए उकसाता है, विडंबना यह है कि यही शैतान का न्याय और उसका पतन साबित होता है।

तो इन मामलों में, जब यीशु शैतान का पहले से ही न्याय किए जाने का उल्लेख करता है, या अब इस दुनिया के शासक के राजकुमार की निंदा या न्याय किया जाता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि यह यीशु की मृत्यु, उसकी महिमा के संदर्भ में है। तो विडंबना यह है कि शैतान का कृत्य, याद रखें कि हमने शैतान का संदर्भ देखा था और शैतान शैतान के प्रवेश के संबंध में है और यहूदा को प्रभावित किया है, और पिता होने के नाते, सच्चा स्रोत, उत्पत्ति, हत्यारी, धोखेबाज गतिविधियों का पिता है धार्मिक नेताओं का। विडंबना यह है कि शैतान जो करता है, वही उसका पतन और उसका न्याय साबित होता है।

लेकिन एक और दिलचस्प बात, ध्यान दें कि नाम, शैतान को प्रस्तुत करने और नाम देने के तरीके में एक पैटर्न है। जब शैतान को शैतान कहा जाता है, या एक बार जब उसे शैतान कहा जाता है, तो यह हमेशा अन्य मानव अभिनेताओं, अर्थात् यहूदा और धार्मिक नेताओं के संबंध के संदर्भ में होता है। इसलिए जब शैतान की चर्चा अन्य मानव अभिनेताओं, जैसे कि यहूदा और धार्मिक नेताओं के संबंध में की जाती है, तो उसे शैतान और शैतान के रूप में चित्रित किया जाता है।

और यह एक बहुत ही उपयुक्त सहसंबंध प्रतीत होता है। शैतान, जिसका अर्थ है आरोप लगाने वाला, या शैतान, जिसका अर्थ है विरोधी, शत्रु, यही शैतान की भूमिका है। और संभवतः शैतान

और शैतान दोनों शब्द, कम से कम प्रकाशितवाक्य 12 और छंद 9 जैसे पाठ के अनुसार, उत्पत्ति अध्याय 3 में सृजन कथा से उत्पन्न हुए हैं, जहां शैतान ने धोखा दिया और मार डाला और आदम और हव्वा को मौत के घाट उतार दिया।

तो अब शैतान, या शैतान, यहूदा और धार्मिक नेताओं को झूठ पर विश्वास करने और यीशु को मारने के लिए उकसाने और प्रभावित करने की शैतान की गतिविधि के लिए उपयोग करने के लिए एक उपयुक्त नाम है। हालाँकि, यह दिलचस्प है कि, जब आप शैतान को ईश्वर या यीशु के साथ संबंध में पाते हैं, तो उसे दुनिया के शासक, या दुनिया के राजकुमार के रूप में संदर्भित किया जाता है। शायद कुछ कारणों से, शायद।

नंबर एक, मुद्दा यह है कि वास्तव में इसका नियंत्रण किसके पास है? वास्तव में संसार का राजा कौन है? एक लौकिक युद्ध या संघर्ष है, और अब शैतान, इस दुनिया के शासक के रूप में, दूसरे शासक के सामने झुकता है और दूसरे शासक, जो कि यीशु है, द्वारा पराजित और शक्तिहीन हो जाता है। तो मुद्दा एक शक्ति का और एक राजत्व का है, और इसलिए शैतान को इस दुनिया के शासक के रूप में वर्णित किया गया है। इसके अलावा, शायद, क्योंकि कई बार यीशु को इस दुनिया का नहीं बताया गया है, तो इसके विपरीत, शैतान को इस दुनिया के शासक के रूप में देखा जाता है।

तो यहां तक कि जिस तरह से नामों का उपयोग किया जाता है, वहां एक पैटर्न है जहां जब शैतान को मनुष्यों, यहूदा और धार्मिक नेताओं के साथ बातचीत या संबंध में देखा जाता है, तो उसे शैतान या शैतान के रूप में चित्रित किया जाता है, जो उन्हें धोखा देता है और उन्हें विश्वास करने के लिए उकसाता है झूठ बोलना और हत्या करना। जब उसे भगवान या यीशु, अन्य अलौकिक प्राणियों के संबंध में चित्रित किया जाता है, तो उसे इस दुनिया के शासक के रूप में चित्रित किया जाता है, जो उसकी हार, उसकी शक्ति की हानि और दूसरे शासक के प्रति झुकने को दर्शाता है, और लौकिक युद्ध और लौकिक युद्ध हार रहा है। . तो जिस तरह से गॉस्पेल में एक चरित्र को चित्रित और प्रस्तुत किया जाता है, उसे देखकर, यहां तक कि व्याकरणिक रूप से, वे क्या भूमिका निभाते हैं, क्या वे क्रियाओं के विषय हैं, वे वास्तव में क्रियाएं कर रहे हैं, या वे केवल क्रियाओं की

वस्तुएं हैं, क्या वे हैं केवल पहचाने जाने पर, क्या वे केवल कुछ और संशोधित कर रहे हैं, क्या वे किसी और के भाषण में अंतर्निहित हैं, या वे वास्तव में दुनिया में कोई भूमिका निभा रहे हैं।

यह सब उस भूमिका को इंगित करता है जो एक अभिनेता या प्रतिभागी निभाता है। तो उसके आधार पर, जॉन में, मैं यह निष्कर्ष निकालूंगा कि शैतान, यद्यपि महत्वपूर्ण है, कथा में उसकी भूमिका के संदर्भ में एक छोटा पात्र है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह धार्मिक दृष्टि से छोटा है, या वह अपने प्रभाव या महत्व में छोटा है।

कथा में इसका मतलब है, जहां तक उसे अभिनय के रूप में चित्रित किया गया है, और एक भागीदार के रूप में, वह पूरे अभिनय में एक प्रमुख भूमिका निभाने के बजाय, अन्य मानव अभिनेताओं को धोखा देने और यीशु को मारने के लिए उकसाने में सहायक भूमिका निभाता है। कथा ही। इसलिए कथात्मक आलोचना अक्सर हमें यह बता सकती है कि पात्र कैसे काम करते हैं, कहानी के कथानक को एक साथ कैसे रखा जा सकता है, लेखक का दृष्टिकोण, और यह सब हमें पाठ के साथ फिर से पकड़ में आने में मदद करता है। टेक्स्ट कैसे काम कर रहा है? संचार करने में लेखक की रणनीति क्या हो सकती है? एक, एक तरह से फिर से, इसके साथ बहुत दूर नहीं जाना है, लेकिन एक दिलचस्प बात यह है कि कथा कैसे काम करती है इसकी तुलना में यह अपने आप में दिलचस्प है, लेकिन जो लोगों को समझने में मदद करने में भी महत्वपूर्ण हो सकती है कहानियां और कथाएं कैसे काम करती हैं, इसके लिए अक्सर फिल्मों देखनी होती हैं और ध्यान देना होता है कि फिल्मों में कथानक कैसे विकसित होते हैं, पात्रों को कैसे चित्रित किया जाता है, अक्सर तनाव कैसे बढ़ता है और उसका समाधान कैसे होता है, और फिर कहानी को निष्कर्ष तक कैसे पहुंचाया जाता है, चरित्र-चित्रण जैसी चीजें कैसे होती हैं या प्रकार के दृश्य या पुनरावृत्ति या महत्वपूर्ण महत्वपूर्ण भाषण किसी कथा या कहानी के महत्व को प्रकट करने के लिए कार्य कर सकते हैं।

एक फिल्म जिसके बारे में मैं सोचता हूं, और उम्मीद है कि आप में से कुछ लोग इसे पहचान सकते हैं, यह एक पुरानी फिल्म है, लेकिन जब मैं और मेरी पत्नी पहली बार डेटिंग कर रहे थे, तो हम जो पहली फिल्म देखने गए थे, वह बैक टू द फ्यूचर नामक फिल्म थी, नंबर एक। मुझे लगता

है कि अब उनमें से तीन हैं, बैक टू द फ़्यूचर 2 और 3, लेकिन यह माइकल जे. फॉक्स द्वारा चित्रित एक किशोर की कहानी है, आप में से कुछ लोग उससे परिचित हैं, जो वास्तव में समय में पीछे की टाइम मशीन में यात्रा करता है, और वास्तव में कुछ चीजें घटित होती हैं जो समय की दिशा को बदलने और बदलने की धमकी देती हैं, और इसलिए वह समय में पीछे चला जाता है, और सौभाग्य से वह चीजों को सुधारने में सक्षम होता है, लेकिन जब वह वर्तमान में वापस आता है, अतीत में रहने के बाद, जब वह अंततः आता है वर्तमान में वापस आकर, वह देखता है कि चीजें बदल गई हैं, लेकिन उसके लिए काफी आश्चर्यजनक और सुखद तरीके से। लेकिन उस फिल्म में दिलचस्प चीजों में से एक यह समझना है कि कथा का दृष्टिकोण क्या हो सकता है, मुख्य संदेश क्या हो सकता है और कहानी का मुख्य परिप्रेक्ष्य और दृष्टिकोण क्या हो सकता है।

उस फ़िल्म में दो दिलचस्प चीजें घटित होती हैं। नंबर एक वह वाक्यांश है जो कुछ महत्वपूर्ण स्थानों पर दो या तीन बार दोहराया जाता है, उनमें से एक बिल्कुल अंत में, और वह यह है कि यदि आप सिर्फ अपने दिमाग का उपयोग करते हैं तो आप कुछ भी कर सकते हैं। लेकिन इसके साथ ही जब आप फिल्म को ध्यान से देखते हैं, तो ध्यान दें कि कितनी बार यह वाक्यांश उन दृश्यों से पुष्ट होता है जहां भौतिक सिर दिखाई देता है, खासकर कहानी के अंत में, जहां माइकल जे फॉक्स द्वारा निभाया गया चरित्र, जो वापस आ गया है अतीत, उसे वर्तमान में वापस आने की जरूरत है, और वह एक कार में है, एक डेलोरियन, जो ऐसा करने में सक्षम है, और समस्या डेलोरियन स्टॉल है।

उसे एक निश्चित समय पर गति तक पहुँचने की आवश्यकता है ताकि वह वर्तमान में वापस आ सके, लेकिन कार रुक जाती है, और वह क्या करता है? वह स्टीयरिंग व्हील पर अपना सिर पटकता है और कार चल पड़ती है। उस प्रकार का दृश्य जहां भौतिक सिर शामिल होता है, पूरी फिल्म में कई बार प्रदर्शित होता है। तो इन सबको एक साथ रखते हुए, फिल्म जिस मुख्य परिप्रेक्ष्य या संदेश को संप्रेषित करने का प्रयास कर रही है वह यह है कि यदि आप सिर्फ अपने दिमाग का उपयोग करते हैं तो आप कुछ भी कर सकते हैं।

तो कथा, फिर से, कथा उसी तरह काम करती है, कथानक की जांच करके, पात्रों का विकास कैसे किया जाता है, वे कैसे बातचीत करते हैं, महत्वपूर्ण भाषणों और दोहराई जाने वाली चीज़ों को देखकर, किसी भी कथा या कहानी के प्रकार के प्रश्न पूछकर। कथात्मक साहित्य से परिचित होने में हमारी मदद करने में लाभदायक हो। अब मैं पुराने और नए टेस्टामेंट के विशेष रूप से कथा प्रकार के दृष्टिकोण की ताकत और कमजोरियों से संबंधित कई मुद्दों को उठाकर अपनी बात समाप्त करता हूं। सबसे पहले, जहां तक कथा दृष्टिकोण की ताकत का सवाल है, कथा दृष्टिकोण मूल्यवान हैं क्योंकि वे पाठ के विवरण पर बारीकी से ध्यान देते हैं।

अतीत में, विशेष रूप से इंजील विद्वानों के लिए जो बाइबिल को भगवान के प्रेरित शब्द के रूप में मानते हैं, जैसा कि मैं करता हूं, कथाओं को मुख्य रूप से कंटेनर के रूप में देखा जाता था जहां से मुख्य धार्मिक सत्य निकाला जाता था। इसलिए कथा को केवल इस अर्थ में मूल्य के साथ देखा गया था कि आप कथा में पाए जाने वाले धार्मिक प्रस्तावात्मक सत्य को बाहर निकालने के लिए इसका उपयोग करेंगे। लेकिन कथात्मक दृष्टिकोण हमें यह देखने में मदद करते हैं कि कथा केवल सत्य का भंडार नहीं है, बल्कि स्वयं सत्य का संचार करती है।

और इसलिए कथात्मक दृष्टिकोण हमें कथानक को देखकर पाठ के विवरणों पर ध्यान देने में मदद करते हैं, जैसे, फिर से, अभिव्यक्ति और संकट, बढ़ता तनाव, समाधान, आदि, पात्रों का विकास कैसे होता है, आदि, आदि। . हमें पाठ के विवरण पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है। और हमने कहा कि कोई भी दृष्टिकोण जो हमें विवरण, पाठ पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है, निश्चित रूप से स्वागतयोग्य है, खासकर उन लोगों के लिए जो बाइबल को ईश्वर के शब्द से कम नहीं मानते हैं।

कुछ भी जो हमें पाठ के विवरण के संपर्क में लाता है। कथात्मक दृष्टिकोण का दूसरा मूल्य यह है कि वे पाठ के पीछे के रूपों या स्रोतों के पुनर्निर्माण में व्यस्त होने के बजाय, चाहे काल्पनिक हों या नहीं, संपूर्ण पाठ, पाठ के अंतिम रूप पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इसके बजाय, एक बार फिर, प्रेरणा की समझ के अनुरूप, कथात्मक दृष्टिकोण हमें पाठ को विच्छेदित करने और मूल और

स्रोतों के बारे में पूछने के बजाय समग्र रूप से पाठ के अंतिम रूप पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करते हैं।

ऐसा नहीं है कि वह नहीं है, मूल्यवान नहीं हो सकता है, लेकिन अंततः हमें पाठ के अंतिम रूप से निपटना होगा, समग्र रूप से पाठ, जैसा वह खड़ा है। और कथात्मक आलोचना हमें ऐसा करने में मदद कर सकती है। वास्तव में, कथात्मक आलोचना कभी-कभी हमें पाठ में एकता देखने में मदद कर सकती है, जहां पहले माना जाता था कि यह असमानता या संघर्ष या विरोधाभास है या शायद पाठ को एक साथ रखने की एक तरह की कैंची और पेस्ट की उत्पत्ति है।

कभी-कभी कथात्मक दृष्टिकोण और साहित्यिक दृष्टिकोण हमें यह देखने में मदद कर सकते हैं कि पाठ वास्तव में एक सुसंगत एकता कैसे है। नंबर तीन कथात्मक दृष्टिकोण है और कथात्मक आलोचना हमें फिर से नंबर दो से संबंधित याद दिलाती है, लेकिन हमें याद दिलाती है कि पाठ स्वयं अर्थ का केंद्र है, न कि इसके पीछे की गतिविधि। और एक बार फिर, इंजीलवादियों द्वारा इसका स्वागत किया जाना चाहिए जिनके लिए धर्मग्रंथ प्रेरित ग्रंथ हैं, ईश्वर के शब्द हैं।

इसलिए, पाठ की उत्पत्ति और उत्पादन की पृष्ठभूमि के बारे में प्रश्न पूछने के अलावा, अंततः हमें पाठ पर ही ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। नंबर चार कथात्मक दृष्टिकोण है जो हमें याद दिलाता है कि ग्रंथ धर्मशास्त्र से पहले आते हैं। नए नियम और पुराने नियम के कथात्मक पाठ न केवल हमारी अपनी धार्मिक योजनाओं के लिए और हमारे अपने धर्मशास्त्रीय निर्माणों में समर्थन के लिए बहाने हैं, बल्कि इसके बजाय धर्मशास्त्र ग्रंथों के विश्लेषण पर निर्भर है।

और उसके कारण, एक कथात्मक और साहित्यिक दृष्टिकोण भी हमें याद दिलाता है कि हमारे धर्मशास्त्र को पाठ में सभी डेटा और सभी विवरणों का हिसाब देना चाहिए, न कि केवल हमारे द्वारा चुने गए लोगों का। अतीत में, मैंने अक्सर सुना था, जब मुझे हेर्मेनेयुटिक्स और व्याख्या सिखाई गई थी, बहुत बाइबिल की व्याख्या, बहुत शुरुआत में, मैंने अक्सर कुछ ऐसा सुना था कि आपको अपने धर्मशास्त्र को कहानियों और आख्यानो पर आधारित नहीं करना चाहिए। सबसे बड़ी समस्या यह है कि बाइबल का अधिकांश भाग कहानी और आख्यान के रूप में है।

समस्या मेरे धर्मशास्त्र को कथा और कहानी पर आधारित करना नहीं है। समस्या यह नहीं जानना है कि कथाएँ और कहानी धर्मशास्त्र को संप्रेषित करने के लिए कैसे काम करती हैं। नंबर पांच, पांचवीं ताकत यह है कि कथात्मक दृष्टिकोण हमें पाठ के सौंदर्यशास्त्र और प्रभावों की याद दिलाते हैं और उन पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

कभी-कभी पाठ को पढ़ना मान्य होता है, और मुझे विश्वास है कि कभी-कभी कहानियाँ, बाइबिल की कहानियाँ न केवल धार्मिक रूप से संवाद करने के लिए, बल्कि प्रभाव के कारण भी बताई जाती हैं। तो फिर, आख्यान केवल प्रस्तावात्मक धार्मिक सत्य के पात्र नहीं हैं। फिर, कभी-कभी कहानियाँ प्रभाव, साज़िश और साहित्यिक प्रभाव के लिए होती हैं।

और फिर नंबर छह, मुझे लगता है कि कथात्मक दृष्टिकोण की एक ताकत यह है कि यह हमें पाठ में नई अंतर्दृष्टि के लिए खोलता है जिसे हमने पहले नहीं देखा होगा या हमने अनदेखा कर दिया होगा। वर्णनात्मक दृष्टिकोणों की केवल कुछ कमजोरियों का उल्लेख करना है जो सामान्यतः साहित्यिक दृष्टिकोणों के साथ हम पहले ही कह चुके हैं। नंबर एक, कभी-कभी कथात्मक दृष्टिकोण पाठ के ऐतिहासिक आयामों की अनदेखी के खतरे में होते हैं।

कोई भी कथानक और चरित्र आदि पर जोर नहीं दे सकता है, और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि या पाठ की ऐतिहासिक संदर्भात्मकता को खो नहीं सकता है। फिर, विशेष रूप से ईसाई धर्म प्रचारकों के लिए जो आश्वस्त हैं और ईसाइयों के लिए जो आश्वस्त हैं कि बाइबिल अपने लोगों की ओर से इतिहास में भगवान के कृत्यों के एक रिकॉर्ड से कम नहीं है, भगवान का एक रहस्योद्घाटन, भगवान खुद को इतिहास में प्रकट कर रहे हैं, ताकि इतिहास का इतिहास पाठ खो गया है। इसके बजाय, हमें यह याद दिलाने की ज़रूरत है कि ग्रंथों का एक लेखक होता है जिसने इसे तैयार किया है।

वे उस भाषा में लिखे गए हैं जिसका उपयोग लोग इसे समझने के लिए करते थे। इनका निर्माण एक विशिष्ट ऐतिहासिक सन्दर्भ में किया गया था। इसलिए कभी-कभी हमें पाठ के ऐतिहासिक

आयामों को नज़रअंदाज करते हुए इतिहास को खोने के खतरे के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता होती है।

नंबर दो, पाठ के धार्मिक आयामों को खोने या अनदेखा करने का खतरा। अर्थात्, हमें याद रखना होगा कि यह न केवल ईश्वर का प्रेरित वचन है, बल्कि हमारे पास पुराने नए नियम के दस्तावेजों का एक पूरा संग्रह है, जिसे चर्च अपने धर्मग्रंथ के रूप में दावा करता है, ईश्वर का वही वचन है जो ईश्वर की मुक्तिदायी गतिविधि की गवाही देता है। उसके लोग, अंततः यीशु मसीह के व्यक्तित्व में। और फिर अंत में, तीसरा, कुछ विधियों और श्रेणियों को पाठ में आयात किए जाने का खतरा हो सकता है।

और हमें हमेशा यह सवाल उठाना पड़ता है कि क्या हम प्राचीन ग्रंथों का विश्लेषण और समझने के लिए आधुनिक श्रेणियों के कथा साहित्य और आधुनिक साहित्य का उपयोग कर सकते हैं? इसका मतलब यह नहीं है कि हम नहीं कर सकते। यह केवल यह सुनिश्चित करने के लिए है कि पाठ स्वयं यह निर्धारित करता है कि हम इसका विश्लेषण कैसे करते हैं और यह नियंत्रित करना चाहिए कि हम किस प्रकार के प्रश्न पूछते हैं, किस प्रकार की श्रेणियाँ हम इसमें लाते हैं। इसलिए उन चेतावनियों, उन कमजोरियों को देखते हुए, साहित्यिक आलोचना और कथात्मक आलोचना के पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण हमें पाठ को नए तरीकों से देखने और पाठ को समग्र रूप से देखने, पाठ के विवरण को देखने और समझने में मदद करने में मूल्यवान उपकरण हो सकते हैं। यह कैसे काम करता है और भगवान आज अपने लोगों के सामने कहानी और कथा के माध्यम से खुद को कैसे प्रकट करते हैं।

अगले सत्र में, हम दो और साहित्यिक दृष्टिकोणों पर गौर करेंगे, या मुझे कहना चाहिए, इससे भी बेहतर, पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण, दृष्टिकोण जो पाठ को ही मिसाल देते हैं। और वह संरचनावाद होगा, जिस पर हम बहुत संक्षेप में विचार करेंगे, और मैं समझाऊंगा कि क्यों। और फिर अलंकारिक आलोचना या अलंकारिक दृष्टिकोण जो ऐतिहासिक प्रश्नों और लेखक के प्रश्नों से पूरी तरह अलग नहीं हैं, लेकिन फिर से, समग्र रूप से पाठ पर ध्यान केंद्रित करते हैं और पाठ की

आंतरिक कार्यप्रणाली को देखते हैं और पाठ को ही देखते हैं, या मुख्य रूप से पाठ को देखते हैं, अर्थ के स्थान या व्याख्यात्मक गतिविधि के स्थान के रूप में।